HelpAge India Fighting isolation, poverty, neglect

हिमाचल प्रदेश में 83% बुजुर्गों को लगता है बजुर्गो के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है

शिमला, 15 जून, 2022

हेल्पएज इंडिया ने आज संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त 'वर्ल्ड एल्डर एब्यूज अवेयरनेस डे' (15 जून) की पूर्व संध्या पर अपनी राष्ट्रीय रिपोर्ट 'ब्रिज द गैप: अंडरस्टैंडिंग एल्डर नीड्स' श्री सुरेश भारद्वाज शहरी विकास मंत्री हिमाचल प्रदेश सरकार ने डे केयर सेंटर खलिनी में यह रिपोर्ट जारी की।

हिमाचल प्रदेश में लगभग 8 लाख के करीब बजुर्ग है, जो इसकी आबादी का लगभग 10 प्रतिशत है। COVID 19 का प्रभाव अभूतपूर्व था और बुजुर्गों पर इसके प्रभाव ने दुनिया भर की सरकारों, संस्थानों और समाज को उस ढांचे को बदलने के लिए मजबूर किया जिससे बुजुर्गों को देखा जाता है।पिछले दो वर्षों में, हेल्पएज कोविड-19 के साथ बुजुर्गों पर महामारी के प्रभाव पर शोध कर रहा है, इसलिए, रिपोर्ट न केवल मुख्य अस्तित्व संबंधी मुद्दों पर केंद्रित है, जो बुजुर्ग दिन-प्रतिदिन के आधार पर निपटते हैं, बल्कि उनके अनुभव की संपूर्णता का भी जायजा लेते हैं। स्व-पूर्ति, भागीदारी, स्वतंत्रता, गरिमा और देखभाल की उम्र बढ़ने पर संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों के आधार पर, इस रिपोर्ट का उद्देश्य उन व्यापक अंतरालों को समझना है, जो बुजुर्गों को जीने, खुशहाल, स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने से रोकते हैं।

"रिपोर्ट कुछ चौंकाने वाले तथ्यों को सामने लाती है और किसी को उस फ्रेम पर फिर से देखने के लिए मजबूर करती है जिसके माध्यम से हम अपने बुजुर्गों को देखते हैं वे केवल आश्रितों के रूप में नहीं देखा जाना चाहते हैं, बल्कि समाज के योगदानकर्ता सदस्यों के रूप में देखा जाना चाहते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि गरीबों और वंचितों के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ, हम वरिष्ठ नागरिकों के एक बड़े वर्ग के लिए एक सक्षम वातावरण तैयार करते हैं जो दीर्घायु लाभांश को प्राप्त करने में योगदान देने के इच्छुक और सक्षम हैं। इस बीच, परिवार वरिष्ठ नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमें देखभाल करने वाली पारिवारिक संस्था का पोषण और समर्थन करना जारी रखना चाहिए। महामारी के बाद, स्वास्थ्य, आय, रोजगार और सामाजिक और डिजिटल समावेशन प्रमुख क्षेत्र बन गए हैं, जिसमें बुजुर्गों के लिए सम्मानजनक जीवन जीने के लिए सामाजिक और नीति दोनों स्तरों पर अंतराल को संबोधित करने की आवश्यकता है। इसलिए इस वर्ष हमने जो थीम रखी है वह है ब्रिज द गैप, '- डॉ राजेश कुमार (राज्य प्रमुख हिमाचल प्रदेश और लद्दाख)

रिपोर्ट में वृद्धावस्था में आय और रोजगार, स्वास्थ्य और भलाई, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और सुरक्षा और बुजुर्गों के सामाजिक और डिजिटल समावेशन में व्यापक अंतर को समझने के लिए गहराई से अध्ध्यन किया है। यह भारत के 22 शहरों में बड़े पैमाने पर एस. ई. सी. ए, बी, सी श्रेणियों में 4,399 बुजुर्ग उत्तरदाताओं और 2,200 युवा वयस्क देखभाल करने वालों के नमूने के आकार पर आधारित है।

अगर हिमाचल प्रदेश की बात की जाये तो यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि 19% बुजुर्ग आय के स्रोत के लिए परिवार पर निर्भर हैं जबकि 37% पेंशन और नकद हस्तांतरण पर निर्भर हैं।

हालांकि, जब आय की पर्याप्तता के बारे में पूछा गया, तो 68% बुजुर्गों ने बताया कि यह अपर्याप्त था। इस बीच, एक महत्वपूर्ण 22% बुजुर्गों ने कहा कि वे आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं, अपनी आय का हवाला देते हुए कि 'बचत/आय से अधिक खर्च' (16%) और पेंशन पर्याप्त नहीं है (40%) शीर्ष कारणों के रूप में। इससे पता चलता है कि बाद के वर्षों के लिए वित्तीय नियोजन और सामाजिक सुरक्षा दोनों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

हालांकि यह सर्वेक्षण रिपोर्ट बड़े पैमाने पर शहरी मध्यम वर्ग के बीच की स्थिति की रिपोर्ट करती है, लेकिन यह केवल गरीब शहरी और ग्रामीण बुजुर्गों की दुर्दशा पर एक सवाल खड़ा करती है, जिनमें से कई के पास कोई पर्याप्त आय या पेंशन नहीं है। हेल्पएज हर महीने 3000 रुपये की सार्वभौमिक पेंशन की वकालत करता रहा है, ताकि हर बुजुर्ग सम्मान के साथ जीवन जी सके।

कोविड -19 महामारी के बाद 65% बुजुर्ग काम नहीं कर पा रहे हैं। 45% बुजुर्ग काम करने के इच्छुक हैं और उनमें से 71% 'जितना संभव हो सके' काम करना चाहते हैं। 67% बुजुर्गों को लगता है कि वे उपलब्ध बुजुर्गों के लिए 'पर्याप्त और सुलभ

रोजगार के अवसर' नहीं हैं। स्वयंसेवा के मोर्चे पर, लगभग 48% बुजुर्ग स्वयंसेवा करने और समाज में योगदान देने के इच्छुक हैं। हेल्पएज की एल्डर सेल्फ-हेल्प-ग्रुप्स (ईएसएचजी) की अग्रणी पहल, सार्थक रूप से लगे रहने और योगदान करने की बुजुर्गों की इच्छा को सफलतापूर्वक प्रदर्शित करती है।

बुजुर्गों ने जिन प्रमुख आकांक्षाओं का हवाला दिया है, वे हैं जो रोजगार के अवसरों के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने के लिए आवश्यक हैं - 45% बुजुर्गों ने 'वर्क फ्रॉम होम' को सर्वोत्तम साधन के रूप में सुझाया, 17% ने 'काम करने वाले बुजुर्गों को अधिक सम्मान दिया' और 9% ने प्रत्येक 'सेवानिवृत्ति आयु में वृद्धि' और 'बुजुर्गों के लिए विशेष रूप से नौकरी' के लिए कहा।

बुजुर्गों की देखभाल में परिवार की एक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। 92% बुजुर्गों ने परिवार के सदस्यों द्वारा 'प्यार और देखभाल' की भावना को जिम्मेदार ठहराया, 67% बुजुर्गों ने कहा कि उनका परिवार उन्हें अच्छा भोजन प्रदान करता है और 48% कहते हैं कि उनका परिवार उनकी चिकित्सा खर्चों को उठाते है और उनकी देखभाल करते है।

एक अच्छी खबर यह है कि 92% बुजुर्गों ने बताया कि आस-पास स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता है, हालांकि 87% बुजुर्गों ने ऐप-आधारित / ऑनलाइन स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता का उल्लेख किया और 82% बुजुर्गों ने बताया कि उनके पास कोई स्वास्थ्य बीमा नहीं है। और केवल 9% बुजुर्ग सरकारी बीमा योजनाओं के अंतर्गत आते हैं।

अधिकांश भारतीय परिवारों में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार एक संवेदनशील विषय है और रिपोर्ट व्यक्तिगत रूप से दुर्व्यवहार के अनुभव को स्वीकार करने के लिए दुर्व्यवहार के अस्तित्व की धारणा के विपरीत है। 83% बुजुर्गों को लगता है कि समाज में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार प्रचलित है, जबकि केवल 4% बुजुर्गों ने बड़े दुर्व्यवहार का शिकार होने की बात स्वीकार की है, जिसमें रिश्तेदार (29%), बेटा (72%) और बहू (14%) हैं। शीर्ष 3 अपराधी। अपमान (86%), मौखिक दुर्व्यवहार (86%), उपेक्षा (43%), आर्थिक शोषण (29%) और एक खतरनाक 43% बुजुर्गों ने पिटाई और थप्पड़ के रूप में शारीरिक शोषण का अनुभव किया।

दुर्व्यवहार करने वालों में से 43% ने कहा कि उन्होंने दुर्व्यवहार का सामना करने की प्रतिक्रिया के रूप में 'परिवार से बात करना बंद कर दिया'। फिर से यहाँ परिवार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला खिलाड़ी बन जाता है।

दुर्व्यवहार की रोकथाम के संबंध में, 70% बुजुर्गों ने कहा कि 'परिवार के सदस्यों को परामर्श' की आवश्यकता है, जबकि 74% बुजुर्गों ने 'समयबद्ध निर्णय' के दुरुपयोग से निपटने के लिए कहा और एक उम्र के अनुकूल प्रतिक्रिया प्रणाली को लागू करने की आवश्यकता है।

अफसोस की बात है कि 49% बुजुर्ग किसी भी दुर्व्यवहार निवारण तंत्र से अवगत नहीं हैं, केवल 3% 'माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के रखरखाव और कल्याण अधिनियम, 2007' के बारे में जानते हैं। यह व्यापक अभियानों, मीडिया आउटरीच आदि के माध्यम से पूरे देश में प्रणालीगत स्तर पर अधिक मजबूत जागरूकता तंत्र स्थापित करने की सख्त आवश्यकता को दर्शाता है।

फिर से, व्यक्तिगत भलाई और खुशी परिवार के सदस्यों की अपेक्षाओं के इर्द-गिर्द गिरती है, 66% बुजुर्गों को लगता है कि उनका परिवार उनके साथ पर्याप्त समय नहीं बिताता है। हालांकि, अधिकांश (84%) बुजुर्ग अपने परिवार के साथ रह रहे हैं, 57% चाहते हैं कि उनके परिवार के सदस्य उनके साथ अधिक समय बिताएं। इससे पता चलता है कि परिवार के साथ रहने के बाद भी बुजुर्गों का बड़ा प्रतिशत अकेलापन महसूस करता है।

सामाजिक समावेशन से मिलीजुली प्रतिक्रिया सामने आई, जिसमें 95% बुजुर्गों ने घर पर अपने देखभाल करने वालों द्वारा परिवार के निर्णय लेने में शामिल महसूस किया, फिर भी 39% बुजुर्गों ने युवा पीढ़ी द्वारा उपेक्षित महसूस किया और खुद को अलग-थलग महसूस किया।

देश भर में डिजिटल इंडिया को भारी बढ़ावा देने और नई डिजिटल तकनीक के निरंतर विकास के साथ, हमारे बुजुर्ग अभी भी बहुत पीछे हैं क्योंकि 58% बुजुर्गों के पास स्मार्ट फोन तक पहुंच नहीं है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्होंने अभी तक इसके लाभों को अनुकूलित नहीं किया है और इसका उपयोग मुख्य रूप से कॉलिंग उद्देश्यों (40%), सोशल मीडिया (55%) और बैंकिंग

42% स्मार्ट फोन के उपयोगकर्ताओं के लिए करते हैं, इस बीच कहा गया है, उन्हें उन्हें सिखाने के लिए किसी की आवश्यकता है।

डिजिटल तकनीक तक पहुंच की कमी भी स्वास्थ्य के क्षेत्रों में विभिन्न ऑनलाइन सुविधाओं तक पहुंच को प्रभावित करती है, विशेष रूप से ऐसे युग में जहां टेली-स्वास्थ्य बढ़ रहा है, दैनिक जरूरत के सामानों तक पहुंच, जो कि महामारी ने दिखाया है, ने लॉकडाउन के दौरान बुजुर्गों के लिए पहुंच को बहुत मुश्किल बना दिया है।

इन कमियों को बारीकी से देखने और दूर करने की जरूरत है। आज, बुजुर्गों का जीवन बहुत लंबा है और कई अपने 80 से 90 वर्ष तक जीते हैं, यह अनिवार्य है कि वे अपनी दूसरी पारी को सम्मान के साथ आगे बढ़ाएं और उन्हें समान और पर्याप्त अवसर और पहुंच प्रदान की जाए, ताकि उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा किया जा सके, उनके जीवन में सुधार हो सके।

For HELPAGE INDIA

Dr. RAJESH KUMAR
State Head
Himachal Pradesh & Ladakh